समृद्ध भारत

द्वारा प्रकाशित

मासिक समाचार–पत्र

संस्करण–एकादश माह–अप्रैल

Edition -XI Month- APRIL

कोरोना विस्फोट जिम्मेदार कौन?

कोरोना के दूसरे लहर का कोहराम जिसके सामने बेबस नजर आ रहा है हर इंसान। महाराष्ट्र से लेकर बिहार तक कोरोनावायरस बदस्तूर जारी है संक्रमण और मौत का दायरा इतना बढ गया है जिसे अंकों के माध्यम से व्यक्त करना भी संभव नहीं है क्योंकि इसमें पल प्रतिपल बढघेतरी होती जा रही है परिस्थितियां ऐसी बन गई है कि विभिन्न राज्य सरकारें मौत और संक्रमण के मामलों में आंकडघें से घपले बाजी कर रही है। जनता और मीडिया के सामने गलत जानकारी प्रस्तुत की जा रही है। धार्मिक परंपराएं ,आंदोलनों की प्रवृत्ति, राजनीतिक दांव –पेंच ,लोकतंत्र का महापर्व अर्थात चुनाव और आम जनमानस की लापरवाही ने आज कोरोनावायरस को इस हद तक बढा दिया है कि शासन –प्रशासन की तमाम तैयारियां बौनी नजर आ रही है। अस्पतालों में बेड का अभाव ऑक्सीजन की कमी लगभग सभी राज्यों में दिखाई दे रही है। अपने पिछले अंक में आज कोरोना के कारण जो स्थिति उत्पन्न हुई है उसकी तरफ इशारा किया था, परंतु सच्चाई यह है कि आज महामारी का कहर कल्पना से भी परे नजर आ रहा है। अगर इस स्थिति को नियंत्रित नहीं किया जा सका तो शायद भारत सहित संपूर्ण विश्व लाशों का ढेर नजर आएगा। महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश सर्वाधिक प्रभावित है। भारत सहित विभिन्न देशों में वैक्सिनो के निर्माण के उपरांत भारतीय जनमानस ने इसे करोना का संपूर्ण निदान मान लिया था, जिसके कारण लोग आवश्यकता से अधिक लापरवाह हो गए। सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क का प्रयोग, हाथों को बार–बार धोना ,अपने आसपास के माहौल को स्वच्छ रखना आदि कोरोना गाइडलाइन को नजरअंदाज किया गया। धार्मिक परंपराओं का हमारे देश में अत्यधिक महत्व है जिसका ज्वलंत उदाहरण हरिद्वार के महाकुंभ में कोरोना काल में भी भरपूर जनमानस की उपस्थिति होना है। भारत के लगभग सभी प्रांतों सभी क्षेत्रों की जनता इस महाकुंभ के अवसर पर हरिद्वार अवश्य आई होंगी ,जहां सोशल डिस्टेंसिंग, मास्क आदि किसी भी कोरोनावायरस इन का पालन नहीं किया जा रहा है जहां विशेषज्ञों के अनुसार दूसरी लहर का यह वायरस अत्यंत घातक है तथा मात्र 60 सेकंड यानी 1 मिनट में संक्रमण को फैला देता है जबकि पहले चरण के वायरस को उसमें 10 मिनट का समय लगता था। महाकुंभ पर उमडे जनसैलाब को आप सभी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया चौनलों पर देख सकते हैं ।इस भीड में यदि एक भी व्यक्ति संक्रमित होता है तो इसका परिणाम क्या होगा यह बताने की आवश्यकता नहीं। लोकतंत्र में पक्ष और विपक्ष की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है यह दोनों एक दूसरे के पूरक होते हैं लेकिन निहित स्वार्थ की राजनीति ने इस सुंदरता को घृणित स्वरूप प्रदान कर दिया है, इसका उदाहरण किसान आंदोलन के रूप में संपूर्ण राष्ट्र के समक्ष उपस्थित है। जिसमें राजनीतिक दलों द्वारा भ्रम फैलाकर इसे विभत्स रूप देने का निरंतर प्रयास किया गया जो अभी भी जारी है यहां तक कि इस आंदोलन में देश विरोधी विदेशी ताकतों का और अपराधिक तत्वों का गठजोड भी सामने आ चुका है। आइए अब चलते हैं लोकतंत्र के महापर्व की ओर अर्थात पांच राज्यों में हो रहे विधानसभा चुनावों की ओर। वोट पडना ही है, चुनाव होना ही है , तो प्रचार भी आवश्यक है। समस्त राष्ट्रीय पार्टियों सहित निर्दलीय प्रत्याशी भी अपनी किस्मत को आजमा रहे हैं। चुनाव प्रचार का दौर चल रहा है और हमारे राजनेताओं द्वारा अधिक से अधिक जनमानस को एकत्रित करने का जुनून छाया रहता है अपनी रैलियों में, अपने रोड शो में तथा अपनी जनसभाओं में ,चाहे इसके लिए कुछ भी करना पडे अपने कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न क्षेत्र के लोगों को धन, नशा (शराब आदि)प्रलोभन देकर एकत्रित करवाया जाता है,ताकि दूसरी पार्टियों के ऊपर जनसैलाब का प्रभाव पड सके।लगभग सभी प्रांतों के स्टार प्रचारकों को चुनावी राज्यों में जनसभाओं के लिए भेजा जाता है सभी राजनीतिक दलों द्वारा। अब यह सोचने का विषय है कि ऐसी परिस्थितियों में अर्थात कोरोनावायरस की इस दूसरी लहर में सरकारी आंकडे के आधार पर संक्रमितो की संख्या ढाई लाख को पार कर चुकी है और इसमें द्रुत गति से लगातार बढघेत्तरी होती जा रही है। ऐसी स्थिति में यह धार्मिक आयोजन, यह राजनीतिक आंदोलन, ये चुनावी सभाएं जिसमें अधिक से अधिक जनता को एक ही स्थान पर एकत्रित किया जाता है या होना पडता है। जब कोरोना दो लाख के आंकडे को पार कर चुका था उसके बाद भी 15 अप्रैल को उत्तर प्रदेश के पंचायत चुनाव में अनियंत्रित अर्थात बिना किसी भी कोरोना गाइड लाइन जैसे (मास्क, सोशल डिस्टेंसिंग) को ना मानते हुए मतदाताओं द्वारा मतदान किया जा रहा था। जिसके फलस्वरूप आज उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र के बाद दूसरे स्थान पर पहुंच चुका है और यह सिलसिला जारी है। अस्पतालों में न तो बेड उपस्थित है, न श्मशान घाट और कब्रिस्तान में अंतिम संस्कार के लिए जगह खाली है क्योंकि यहां भी नंबरिंग चल रही है।और इस स्थिति में किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन होता नजर नहीं आ रहा। इसलिए हम इन सब स्थितियों की घोर निंदा करते हुए देश की समस्त प्रबुद्ध जनमानस से यह प्रार्थना करते हैं कि इन परिस्थितियों को परिवर्तित करने के लिए जो कुछ भी किया जा सके उसे करने के लिए एकजुट होकर अथक प्रयास करें।

संपादक
तरुण सिंह

राज बेगम

श्नाइटिंगेल ऑफ कश्मीरश के नाम से मशहूर कश्मीरी गायिका राज बेगम का जन्म 27 मार्च 1927 को श्रीनगर में हुआ था। वादी की प्रसिद्ध कश्मीरी गायिका राज बेगम को कश्मीर की आशा भोंसले के नाम से भी पुकारा जाता था। आपने रेडियो कश्मीर के लिए हजघरों गाने गाए। रेडियो कश्मीर में आपने एक लम्बे समय (1947 से 1986) तक काम किया था। सन् 2002 में आपको भारत सरकार द्वारा श्पद्मश्रीश की सम्मानोपाधि से विभूषित विभूषित किया गया था। 26 अक्टूबर 2016 को 89 वर्ष की आयु में राज बेगघ्म का निधन एसएमएचएस हॉस्पिटल में सुबह 7रू00 बजे हुआ। फल्मि अभिनेता दिलीप कुमार आपकी आवाज को जादुई आवाजघ के रूप में मानते रहे।

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक
नाद अनुसंधान ट्रस्ट(पंजीकृत)
प्रबंधक– संजय कुमार बनर्जी
तकनीकि सहयोग– सभ्यता सिंह
सम्पादकीय विभाग
संपादक–तरुण सिंह
सह–संपादक–अभय प्रताप सिंह,
संस्कृति सिंह
विशेष संवाददाता– तनुज कुमार

विश्व पुस्तक दिवस पर विशेष
किताब की पीड़ा

ऐ किताब !
गई तेरी कित आब?
एक वक्त होता था
जब तुझे हाथ में रख
मन में आता था रुआब।
पर आज तुझे छूने की भी
जहमत नहीं उठाता कोई नवाब।।
वो भी क्या दिन थे जब तुझे
अपने पास रखने की चाहत में
किताब घरों के आगे लगती थीं
लम्बी–लम्बी कतार।
होती थी मारम–मार।।
पुस्तकालयों से भी
हफ्ते–दो हफ्ते के लिए लिए ही सही
मिल जाए तू कैसे भी
इसी जद्दोजहद में लगे रहना भी होता था स्वीकार।
रेलवे और बस स्टैंड्स पर बने
बुक स्टॉल्स पर और
रोज सुबह–सवेरे के साथ
छुट्टी वाले दिन सड़कों पर भी
मिलता था तुझे
तेरे दीदार करने वालों का
और खरीददारों का प्यार।
पर आज कहाँ खोता जा रहा है तेरा अस्तित्व ?
आज घर में, पुस्तकालय में
हर जगह तू बिना साँस लिए निर्जीव की तरह पड़ी है।
और अड़ी है इसी जिद पर
कि मेरे अस्तित्व को पहचानने वाले
कल भी मेरे मुरीद थे,
आज भी मेरे मुरीद हैं,
और कल भी रहेंगे मेरे ही मुरीद।
क्योंकि मुझसे अधिक और कोई
नहीं हो सकता उनके मुफीद।
अब तोड़ दे अपना यह भरम
क्योंकि ये जमाना अब वो नहीं रहा
जिसमें तुझे पाने की चाहत इतनी होती थी कि माँगने में भी
नहीं करता था कोई शरम।
अब सब हाई टेक हो चुके हैं।
लैपटॉप और मोबाइल की
दुनिया में ही पूरी तरह से
खो चुके हैं।
अब तुझे किसी पुस्तक भण्डार
या पुस्तकालय में नहीं खोजा जाता।
अब तुझे गूगल पर सर्च किया जाता है।
बिना समय गँवाए,
बिना खर्च किए,
स्क्रीन पर ही पढ़ लिया जाता है।
जितना अंश जहाँ से भी चाहे,
लेकर सेव कर लिया जाता है।
क्या इतनी सुविधाएँ दे पाएगी तू।
पहले तेरी सुरक्षा के लिए अलमारियाँ बनवाई जाती थीं।
कीड़े–मकोड़ों से बचाने के लिए
फिनाइल की गोलियाँ
हर खन में डाली जाती थीं।
अब तेरे बाह्य अस्तित्व की
नहीं है कोई जरूरत।
नहीं देखना चाहता कोई
तेरी मनहूस सूरत।
फिर भी अड़ी पड़ी है जिद पर
कि मेरा अस्तित्व सदा से
रहा है और रहेगा।
अबकी बची–खुची पीढ़ी को
और चुक लेने दे।
फिर तुझे सजा–संवारकर
बाजार में लाने वाले ये बचे–खुचे
न प्रकाशक मिलेंगे,
न विक्रेता और ग्राहक।
इसलिए श्रजकश की बात मान,
मत हो परेशान,
और मिटा दे अपनी पहचान।
क्योंकि अब की पीढ़ी के लिए
धीरे–धीरे तू होती जा रही है अनजान।
खोती जा रही है तेरी पहचान।
क्योंकि समय से बड़ा
नहीं हुआ कोई बलवान।।
नियति पर भरोसा रख
और अपनी विदाई का मजा चख।।

–डॉ. राजेंद्र कृष्ण अग्रवाल रजक मथुरा।

एक सोच

जीवन में मिली किसी एक
हार से निराश नही होते
जीवन के पथिक पथ है
इस पर संघर्ष मिलें तो
उदास नही होते
तुम्हारे अश्र मोती है ,
धागे के टूटने से मोती
वेजाार नही होते
छुपा लेना अपने दर्दों गम
जिनके हाथ में खंजर हो
उनके पास इलाज नही होते
अपने होसलों को कम
मत होने देना
जिनके होसलें बुलंद हों
उनके होसलें कभी कम
नही होते

कलम से
सी एल गुप्ता
एडवोकेट
एल एल बी, एल एल एम

Introduction and Basic Concept of Income Tax

"Income Tax is levied on the total income of the previous year of every person".

Taxes levied on the earnings of companies and individuals are referred to as income taxes. Earnings subject to income taxes can come from diverse sources, including
- Salaries,
- Business or Professional Income,
- Capital Gains,
- House property &
- any other sources i.e., interest, gambling winnings etc.

How to calculate tax liability from taxable income. Tax implications on your taxable income (minus your tax deductions) equals your gross tax liability. Gross tax liability minus any tax credits you're eligible for equals your total income tax liability.

Taxes are broadly divided into two parts namely, Direct Tax and Indirect Tax. Direct Tax is levied directly on the income of the person. Income Tax and Wealth Tax are the part of Direct Tax.

Whereas, in indirect taxes, the person who pays the tax, shifts the burden to the person who consumes the goods or services.

Tax is the compulsory financial charge levy by the government on income, commodity, services, activities or transaction.

The income earned individuals will determine the income tax slabs under which they fall. The lower the income, the lower the tax liability, and those who earn less than Rs.2.5 lakh p.a. are exempt from tax.

Depending on the age of the individual, the three categories that resident individual taxpayers are divided into are mentioned below
« Individuals who are less than the age of 60 years old.
« Senior citizens who are above 60 years old and below 80 years of age.
« Super senior citizens who are above 80 years old.

Taxes are the basic source of revenue for the government, which are utilized for the welfare of the people of the country through government policies, provisions and practices.

Sunil Aggarwal
Aggarwal Sunil & Associates
Chartered Accountants
Email: -
aggarwalsunil.associates@gmail.com
91 8826 99 7310

ब्रज की विलुप्तप्राय तालबन्दी गायन–परम्परा

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल, मथुरा
संगीतज्ञ ० लेखक ० सम्पादक

मुगल शासक औरंगजेब द्वारा संगीत पर प्रतिबंध लगाने के फरमान से संगीतज्ञों में हा–हाकार मच गया। लाख अनुनय–विनय के बाद भी औरंगजेब टस–से–मस नहीं हुआ। परिणामत: भारी संख्या में दु:खी कलाकार दिल्ली से कूचकर राजस्थान के पूर्वी अंचल के राजपूताना दरबारों की ओर चले गए। बहुत–से यहाँ दरबारों में आश्रय ले बैठे तो कुछ अन्य ऐसे भी थे , जिन्होंने इस घटना को एक चुनौती के रूप में स्वीकार किया। वे यहाँ आकर राग–रागिनियों में ओज लाते हुए वीर रस पूर्ण रचनाएँ करने लगे। वे डमरू के ही विस्तृत रूप नाँद (बम्ब) पर डंके की चोट अपनी बात कहने लगे, वह भी खडे होकर और ताल ठोंककर।

सम्भवतया इन्होंने माना होगा कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता इसलिए इनको समूह बनाकर समवेत स्वरों में गाने का ख्याल आया होगा। इस परम्परा के उद्भव की कहानी भी लगभग हवेली संगीत के उद्भव जैसी ही रही है। इन कलाकारों ने अटल विश्वास के साथ गाना प्रारम्भ किया होगा, अतरू रुपद–धमार को प्राथमिकता दी। भरतपुर व आसपास के क्षेत्रों में गृहत्यागी साधु–संतों ने तालबंदी गायन की परंपरा स्थापित कर भारतीय संगीत की रक्षा की थी। चुनौती को स्वीकार कर, ताल–वाद्यों को प्रमुखता देते हुए, वीर रस पूर्ण ढंग से संगीत के माध्यम से अपना रोष प्रकट किया। ताल ठोक कर अपनी बात कहने वाले इन कलाकारों की यही गायकी तालबंदी के नाम से प्रचारित–प्रसारित हुई।

लगभग शतायु प्राप्त स्वर्गवासी हुए तालबन्दी के वरिष्ठ कलाकार श्री मदन मोहन मालवीय मानते थे कि इस गायकी का प्रारंभ लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व सवाई माधोपुर से हुआ। नगर (भरतपुर) के ही गायक भगवान दास सोनी अध्यापक के अनुसार– उनके पिता श्री मूलचंद व ताऊजी श्री रोशनलाल भी अपने समय के अच्छे गायक थे। वे यहाँ से 10 किलोमीटर दूर अलवर राज्यान्तर्गत कस्बा कठूमर में अपने गुरु एक साधु से विभिन्न राग–रागिनियों को सीख कर आते थे। अलवर में तालबंदी के जनक जती नामक एक साधु माने जाते हैं जो लगभग 200 वर्ष पहले जयपुर से यहाँ आकर बसे थे। शहर के पूर्वी भाग में स्थित उनका निवास जतीजी की बगीचीश के नाम से जाना जाता है। बाबा यहाँ तालबंदी प्रारंभ कराने हेतु ही आए थे। यहाँ से पहले बाबा ने बिवाई, मंडावर, बांदीकुई और बसुआ में तालबन्दी दलों की स्थापना की थी। अलवर में आषाढ़ मास में लगने वाले रथ–यात्रा मेले के अवसर पर होने वाले तालबन्दी दंगल का प्रारंभ भी जती बाबा ने ही कराया था, जो अब लगभग तीन–चार दशकों से नहीं हो रहा।

भरतपुर जिलान्तर्गत कस्बा नगर क्षेत्र के श्री बाबूलाल पलवार तालबंदी के ऐसे महान् कलाकार और गुरु हुए हैं जो अत्यंत गरीबी में रहते हुए भी सिलाई का कार्य करते हुए इस विधा को आजीवन आगे बढघते रहे। यद्यपि उनकी शिक्षा बहुत ही कम थी तथापि उन्होंने तालबंदी पर इतना कार्य किया कि इस गायकी के वे पर्याय माने जाने लगे। उनको विविध शास्त्रीय, उप–शास्त्रीय और लोक गायन –शैलियों का बखूबी ज्ञान था। लय के 29 दर्जों तक की उनको समझ थी। उनकी इस प्रतिभा को पहचान कर ही मथुरा में ब्रज संगीत विद्यापीठ द्वारा उनको मानद डॉक्टरेट की उपाधि डॉ. भीमराव आंबेडकर विश्वविद्यालय (पूर्ववर्ती आगरा विश्वविद्यालय) आगरा के कुलपति और विद्यापीठ के सचिव (इस लेख के लेखक) द्वारा प्रदान की गई थी और उसी उपाधि को आधार मानकर भरतपुर क्षेत्र की एक शोधकत्री सुश्री स्नेह लता शर्मा ने राजस्थान विश्वविद्यालय से ष्तालबंदी गायन के पुरोधा स्वर्गीय डॉक्टर बाबूलाल पलवार जी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक शोध परक अध्ययनष विषय पर वर्ष 2017 में ही पी–एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। यह भी एक संयोग ही कहलाएगा कि इनके शोध–प्रबन्ध का लोकार्पण भी कस्बा नगर में वहाँ की नगर पालिका द्वारा 27 मार्च 2018 में आयोजित श्री राम रथ यात्रा मेले में इस लेख के लेखक द्वारा ही मुख्य अतिथि की हैसियत से किया गया था। ज्ञात हो कि श्री बाबू लाल जी के निधन के पश्चात् प्रतिवर्ष नगर (भरतपुर) की नगरपालिका द्वारा श्री राम रथयात्रा मेले के अवसर पर रात्रिभर विशाल तालबन्दी दंगल का आयोजन भी किया जाता है जिसमें विभिन्न स्थानों के तालबन्दी दल प्रतिभाग करते हैं। इस लेख के लेखक ने इस प्रतिष्ठित आयोजन का कई बार उद्घाटन भी किया है।

गायन–स्वरूप :

यह ब्रज लोक संगीत की एक ऐसी विधा है जिसमें दरबारी व देवालयों के शास्त्रीय संगीत को ग्रहण कर और उसमें भाव संगीत व लोक संगीत की विविध विधाओं का समावेश कर लोकरंजक बना दिया गया। ऐसा ही कुछ–कुछ मथुरा के चतुर्वेदी समुदाय में प्रचलित और होली के अवसर पर गाई जाने वाली लोक–तान गायकी में भी देखा जा सकता है, किन्तु उसमें इस गायकी के अखाड़ों के गुरु काव्य–रचना कुछेक फिल्मी गीतों की तर्जों को आधार बनाकर ही अधिक करते हैं, जबकि तालबन्दी में विशुद्ध शास्त्रीय संगीत को अधिक महत्त्व दिया जाता है। तालबन्दी में कलाकारों के अलग–अलग दल रहते हैं। छोटे दल में 8–10 और बडघे दल में 20–25 कलाकार तक रहते हैं। किसी भी तालबन्दी दंगल में दो से लेकर आठ तक गायन–मण्डल सम्मिलित होते हैं। ये कलाकार नाँद या बम्ब (विशाल नगाड़े) पर सम और तोड़ दिखलाते हुए अद्वितीय प्रदर्शन करते हैं।

इस प्रकार के गायन में बम्ब या नाँद वादक सम प्रदर्शित करने के लिए नाँद पर आठ मात्रा के अन्तराल तक चोपों (लकड़ी के डण्डों) से प्रहार करता है। तोड़ दिखाने हेतु गायन के सम (प्रथम मात्रा) से 12 मात्रा पूर्व डण्डे मारने प्रारंभ कर देता है।इस प्रक्रिया को समझाने के लिए हम यहाँ राग बहार और 16 मात्रे की तीनताल में एक छोटे खयाल की बन्दिश का उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं–

म त स छे ड़ो जी भ्र स
म र मो हे स बा ` र
बा स ` र

उक्त बन्दिश में बारबार के अक्षर बा पर सम और छेड़ो के अक्षर छे पर खाली है। बन्दिश का प्रारम्भ मत शब्द से हो रहा है, जिसका म अक्षर ठेके के सातवें मात्रा पर पड़ता है। यहाँ गायन में सम दिखाने के लिए 8 मात्रा पहले अर्थात् नौवीं मात्रा छे से नाँद पर डंके मारने प्रारम्भ करने होंगे जबकि तोड़ दिखाने के लिए 12 मात्रा पहले अर्थात् पाँचवीं मात्रा से। दोनों ही क्रियाओं में डंके सम बा के आने से पूर्व तक बजते ही रहेंगे। सम व तोड़ प्रारंभ करने से पूर्व हाथ ऊँचे किए जाते हैं। यह प्रक्रिया खैंच कहलाती है। यह नाँद पर सम व तोड़ पर डंके प्रारम्भ करने के 2, 3, 4 अथवा 5 मात्राओं पहले दिखाई जाती है। खैंच की यह प्रक्रिया नाँद वादक को सम व तोड़ के डंके मारने के लिए संकेत देने हेतु की जाती है। खैंच की क्रिया कलाकारों एवं दर्शक–वृन्द दोनों में ही जोश और उत्साह का संचार करती है और चित्ताकर्षक भी लगती है। बम्ब या बड़ी–बड़ी नाँदों पर सम और तोड़ का प्रदर्शन इस गायन–पद्धति की मुख्य विशेषता है। ध्यातव्य है कि नाँद पर दिखाए जाने वाले सम और तोड़, तबले व ढोलक के अतिरिक्त होते हैं।

शास्त्रीय राग–रागिनियों के गायन के समय गायक गण हथेलियों के माध्यम से सम–ताली–खाली का प्रदर्शन करते रहते हैं। नाँद पर गायन के बीच में ही अलग –से सम व तोड़ दिखाया जाता है, जिसके लिए एक विशेष नियम निर्धारित किया हुआ है।कलाकार कितन ` ही मात्रा की किसी भी ताल में गायन क्यों न करें, सम दिखाने के लिए गायन के सम (प्रथम मात्रा) से आठ मात्रा पूर्व से ही नाँद पर डंके पड़ने शुरू होंगे। नाँद पर सम व तोड़ दिखाए बिना यह गायकी अपूर्ण ही मानी जाती है। तालबन्दी दंगल के निर्णायक गण और श्रोतागण गायन की सफलता व पूर्णता भी तभी मानते हैं जबकि नाँद पर सम व तोड़ सही

अनुसंधान

(पृष्ठ–4 का शेष भाग)

तरीके से दिखाए जाते हैं। तालबन्दी के सभी कलाकार अव्यासायिक होते हैं और अपने व परिवार के भरण–पोषण के लिए कोइ ‍–न–कोई व्यवसाय अवश्य करते हैं। इतना सब होने के बाद भी आश्चर्य इस बात का होता है कि इनको तमाम शास्त्रीय राग–रागिनियों का न केवल ज्ञान होता है बल्कि ये उनको रागों के समय–चक्रानुसार ही प्रस्तुत करते हैं। तालबन्दी के दंगलों में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि कोई भी राग उसके समय से ही गाई गई है अथवा नहीं। समय से हटकर जो गाना चाहते हैं, उनको निर्णायक व श्रोतागण दोनों ही रोक देते हैं। यद्यपि यह सब कार्य ये यों ही नहीं कर लेते, बल्कि इसके लिए ये बा–कायदा योग्य गुरुओं से इसकी तालीम लेते हैं। तालबन्दी के कलाकारों को मैंने भैरव, भैरवी, देश, वृन्दावनी सारंग, बागेश्री, भीमपलासी जैसे प्रचलित रागों को ही नहीं, बल्कि बसन्त, जोग, बसन्त बहार, कोमल ऋषभ आसावरी, कौशिक ध्वनि, जोगकौंस, शहाना, जैतश्री, मा: बिहाग, हंस किंकणी, धनाश्री, सिन्दूरा, देसी, नट भैरव, शिवरंजनी, भिन्न षड़ज, गोरख कल्याण जैसे तमाम रागों का कुशलता से गायन करते हुए देखा है। डॉ. बाबूलाल पलवार को तो मैंने श्री स्वामी हरिदास जी के श्केलिमालश के पदों तक को विविध रागों व तालों में निबद्ध कर तालबन्दी में गाते हुए सुना है। वे जब–जब भी मेरे संगीत विद्यालय में आते, अनेक अप्रचलित रागों और तालों में स्वयं द्वारा रचित तालबन्दी की बंदिशें अवश्य सुनाते। तालबन्दी गायकों में विविध रागों की ही भाँति तमाम तालों का ज्ञान भी देखने को मिलता है। मैंने इन कलाकारों में तीनताल, एकताल, चारताल, सूल ताल,झपताल, धमार, दीपचंदी, आड़ा चौताल, मत्त, अष्टमंगल और ब्रह्म ताल जैसी सरल और कठिन दोनों ही प्रकार की तालों में प्रदर्शन करने की क्षमता भी देखी है। नाँद के अतिरिक्त इनके वाद्य–यन्त्र हारमोनियम, तबला, ढोलक, सारंगी, मंजीरा और नक्कारा आदि रहते हैं। इनके गायन के विषय राम और कृष्ण–भक्ति से ओत–प्रोत या आध्यात्मिक अथवा राष्ट्र–प्रेम से परिपूरित रहते हैं। काव्य की भाषा ब्रज–भाषा ही रहती है। इन कलाकारों द्वारा खड़े होकर ही रुपद –धमार और खयाल, ठुमरी सहित गजल, कव्वाली, लोकगीत, ब्रज के रसिया आदि विविध गायन–शैलियों को प्रस्तुत करते हुए देखना किसी आश्चर्य से कम नहीं होता। इनके दंगल भी पूरी–पूरी रात चलते हैं। गायन से पूर्व 3–4 मिनट तक बंब एवं अन्य वाद्यों का घनघोर वादन होता है। वीर रस का भाव लिए दल– नायक अभिनयात्मक ढंग से मुक्का तानकर और घूर–घूर कर वादक को निर्देश देता है। फिर बम्ब पर चोपों की तड–तड प्रारंभ हो जाती है। बंब वादक प्रस्तुत ताल में एक आवर्तन बजाकर चुप हो जाता है। गायन की समाप्ति पर भी जोर–जोर से बंब–वादन होता है। गायन में पहले प्रस्तुत की जाने वाली राग में संक्षिप्त आलाप लेते हैं। फिर दोहे, सवैये या कवित्त आदि के बाद बन्दिश को गाया जाता है। ध्यातव्य है कि जब माइक नहीं थे, उस जमाने में भी दंगलों में 10–10 हजार श्रोतागण होते थे। कलाकार कमर की फैंट में ही सारंगी, तबला जैसे वाद्य बाँधकर और हारमोनियम और ढोलक रस्सी व डोरी के माध्यम से गर्दन में लटकाकर घूम –घूमकर गायन करते थे एवं श्रोताओं के बीच–बीच में रुक कर गायन सुनाया करते थे। लोक संगीत को शास्त्रीय संगीत से जोडघ्कर सेतु का कार्य करने वाली इस गायकी में ताल–वाद्यों की प्रधानता रहती है। 108 वर्ष तक जीवित रहे लक्ष्मणगढ़ (अलवर) के स्व. बाबा प्रेम स्वरूप जी, वैर (भरतपुर) के स्व. कमलनयन जी, डॉ. बाबूलाल जी पलवार (नगर, भरतपुर), श्री कल्याण प्रसाद जी पदमपुरा, श्री सीताराम जी (तुंगा), श्री पुष्पेन्द्र कुमार शर्मा (छोटा बाजार, दौसा) जैसे अनेक गुरुओं के नाम श्तालबन्दी गायनश के कुशल गुरुओं के रूप में जाने जाते हैं। तालबन्दी के प्रमुख गायक और कवि चंदूलाल जी (बिवाई), लक्ष्मी नारायण जी (महुआ) और बाद में श्री जगन प्रसाद जी व श्री शिम्भू सिंह जी द्वारा रचित भक्ति, श्रृंगार और देशभक्तिपरक रचनाएँ आज भी विभिन्न अखाड़ों के कलाकारों द्वारा गाई जाती हैं। ऐसे कलाकारों ने विभिन्न अखाड़ों और कलाकारों की एक लम्बी परम्परा छोड़ी है। विगत 25–30 वर्षों से बहुत–से गायक–मण्डल सुगम संगीत गायन की प्रस्तुतियाँ करते समय राजनीति, पर्यावरण, परिवार नियोजन, साक्षरता अथवा अन्य मनोरंजक विषयों पर भी रचनाएँ प्रस्तुत करने लगे हैं। इसका लाभ यह हुआ कि आम जनता भी तालबन्दी से निकट से परिचित होने लगी। इस विधा के प्रमुख कलाकार जगन प्रसाद जी व शिम्भू सिंह जी के तो कई रचना –संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। यहाँ हम मनोखर (अलवर के अरावली पर्वत पर बसा एक छोटा–सा गाँव) निवासी शिम्भू सिंह श्राघवश की राग काफी में निबद्ध अत्यन्त ही लोकप्रिय श्रृंगारिक रचना आपके अवलोकनार्थ दे रहे हैं जिसका नख–शिख–वर्णन देखते ही बनता है–

याकी बिंदिया में चमकत हीरा की कनी।
मनों झलझलात नभ नखत धनी।।
मेचक कच कुंचित जनु अहिगन,
भाल विशाल तिलक केसर कन।।
भृकुटि बंक कंदर्प धनुष जनु,
रंजन दृग खंजन मद भंजन।।
याकी कज्जल रेख मनों तीर की अनी।
याकी बिंदिया में चमकत हीरा की कनी।।1।।
गोल कपोल लोल मनभावन।
कच तल श्रुति ताटंक सुहावन।।
अति रमणीक अधर बिंबा फल।
दसानन पाँति मनहु मुक्ता तल।।
याकी नाक मनहुँ शुक तुण्ड बनी।
याकी बिंदिया में चमकत हीरा की कनी।।2।।
कम्बु कंठ युग भुज जनु करि कर।
श्रीफल सरिस कठोर पयोधर।
त्रिवली युत सुंदर परमोदर।
यमुन भँवर सम नाभि मनोहर।।
याकी लचक जात कटि केहरि धनी।
याकी बिंदिया में चमकत हीरा की कनी।।3।।
कदलि खम्भ युग जंघ बखानो।
पिंगुरी पिण्डरी गुल्फन मानो।।
कोमल चरण कमल अरुणारे।
जावक युत लागत अति प्यारे।।
याकी चाल मराल समान गनी।
याकी बिंदिया में चमकत हीरा की कनी।।4।।
लाजत कोटि उरबसी मन में।
उठत सुगंध इत्र की तन में।
फबत शशिम्भुसिंहश यों जुबतिन में।
मानों मदन प्रिया सखियन में।।
याकों अति चाहत यदुवंश मनी।
याकी बिंदिया में चमकत हीरा की कनी।।5।।

वर्तमान में नगर, वडेर, मीठावास, कहरवावाल, वैर, पण्डितपुरा, बसेट, निठार, सोंखरी, बांदीकुई और अलवर, दौसा, सवाई माधौपुर, करौली और भरतपुर आदि के तालबन्दी दल प्रसिद्ध हैं। आज भी अलवर, दौसा, सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर और भरतपुर आदि जिलों में तालबन्दी दंगलों के आयोजन होते रहते हैं, जो रात –रातभर चलते हैं।

वर्तमान गुरुओं में पण्डित जगदीश प्रसाद शर्मा , वैर (भरतपुर), श्री केदार जी सैन ग्राम व पोस्ट : नारौली डांग तहसील रू सपोटरा (करौली), श्री रेवड़मल जी, ग्राम : दिवसा, तहसील : गंगापुर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इतना सब कुछ होने पर भी विगत कुछ वर्षों से यही देखने में आ रहा है कि पुराने कलाकारों के आगे आज के कलाकार बहुत बौने होते जा रहे हैं। अब तो यही लगता है कि यह दुर्लभ संगीत–विधा भी संरक्षण–सम्वर्धन और प्रचार–प्रसार के अभाव में विलुप्ति के कगार पर जा रही है क्योंकि आजकल की युवा–पीढ़ी को अगर किसी भी क्षेत्र में साधना के पश्चात् यश और अर्थ प्राप्ति की सम्भावना नहीं दिखती तो वो उस ओर झाँकना भी पसन्द नहीं करती, फिर यह तो बेहद श्रम–साध्य कला है। इसलिए इस विधा और इसके कलाकारों को सरकारी संरक्षण और प्रोत्साहन तथा युवाओं के लिए परम्परानुकूल समुचित शिक्षण–प्रशिक्षण की भी महती आवश्यकता है अन्यथा इस अद्वितीय संगीत–कला को भी विलुप्त होते देर नहीं लगेगी।

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल
डॉ. राजेन्द्र कृष्ण संगीत महावि□ालय एवं शोध–संस्थान
श्संगीत–सदनश
महावि□ा कॉलोनी, द्वितीय चरण, मथुरा–281 001 (उत्तर प्रदेश)
मो. 9897247880 (व्हाट्सएप्प)
8851402815
ई–मेलरू तांहतूंस19256/हउंपस.बवउ

5 Biggest Mistakes of Millennials :

1. Not Buying Health Insurance and Term Plan:
We earn for our family's happiness. But what if something happens to you or your family member? All your savings will be wiped out in one go. Buying a Health Insurance for all family members and a Term Plan for earning individuals is one of the best gifts you can buy for your family's wealth protection.

2. Buying Unnecessary Goods:
When a millennial starts earning, he/she experience a sense of freedom and sometimes buy things which are not very necessary like expensive gadgets, fancy clothes etc.
One must remember the words of Mr. Warren Buffet "If you buy things you don't need, you will soon have to sell things you need"

3. Not Planning for Retirement:
Retirement Planning mostly comes last when it comes to Financial Planning for millennials, but it should be on the priority list. With the advancement in medical facilities, the average age of an individual is rising thus one must plan for those extra years in advance by when in most cases, the sources of active income dries up.

4. Running for Free Lunches:
These days there are many trading platforms, forex apps, binary options applications etc which promises mega returns in a very short time frame.
One must remember there are "No Free Lunches" and must only believe in long-term investing without the use of speculative tools.

5. Stop Learning and Investing in Oneself:
According to Charles Darwin "It is not the strongest of the species that survive, nor the most intelligent, but the one most responsive to change"
One must always be a learning machine and keep upgrading himself/herself.
I hope this reading was useful and you won't commit these mistakes.
We look forward to your feedback on naad.anusandhan@gmail.com
Thanks for your time.

Pawas Aggarwal
91 87558 26311

Mrigaashree
MRIGAASHREE CAPITAL PVT. LTD.
Mutual Funds | Insurance | PMS | Equity | Commodities | Currency | Bonds | IPOs | Fixed Deposits

सामूहिक खेती एक अवसर

हमारा समाज जब भी बंटा है लोगो ने इसका फायदा उठाया इस बात का इतिहास हमेशा गवाह रहा है एक कहानी है की किसी घर में चार बेटे थे उनके पिता ने आपस मिलकर में रहने को कहा लेकिन वो नहीं माने फिर पिता ने उन्हें समझाने के लिए एक युक्ति पर काम किया चारो बेटों को एक एक लकड़ी देकर तोड़ने को कहा सबने आसानी से एक–एक लकड़ी तोड़ दी फिर पिता ने चारो को उन लकड़ियों का बण्डल दिया और एक साथ तोड़ने को कहा तो कोई भी उस बण्डल को नहीं तोड़ पाया ष्आज ये कहानी हमारी कृषि पर भी लागु होती है।

<u>लेकिन आने वाला कल हमरे देश के किसानो के लिए सुनहरा भविष्य लेकर आ रहा है बस जरुरत है सही समय निर्णय लेने की</u>

सामूहिक खेती को बढावा के लिए स्थापित हो रही है फारमर्स प्रोड्यूसर कंपनी ... खेती पर बढते बोझ और बंटती जमीन के मद्देनजर सामूहिक खेती को बढावा देने के लिए महत्वाकांक्षी योजना तैयार की है। इसके तहत प्रत्येक पंचायत में कृषि हित समूह (एफआईजी) और प्रखंड स्तर पर किसान उत्पादक संगठन (कम्पनी) का गठन किया जाएगा।

जैसा की सभी जानते है हम एक कृषि प्रधान देश है मगर हमारे देश के ज्यदातर किसान लघु /छोटे खेतो के मालिक है जिस वजह से लागत और फसल मिला मूल्य हमेशा एक बड़ा मुद्दा बना रहता क्यूंकि छोटा किसान बीज , खाद और रक्षःक दवाइयां महंगें दाम पार खरीद करता है और कम पैदवार होने की वजह से उचित दाम भी उसे नहीं मिल पता इसी का समाधान,खेती पर बढध्ते बोझ और बंटती जमीन निवारण किया जायेगा फारमर्स प्रोड्यूसर कंपनी के द्वारा क्यूंकि ये कंपनियां छोटे खेत धारक किसानो को संगठित करके उनके लिए खाद बीज और अन्य चीजें सस्ते दामों पर उप्लब्ध करायेगीं और फसल को खरीद के द्वारा उचित बाजार मूल्य भी दिलाएगी जिससे किसानो की आय तो बढ़ेगी ही साथ ही उनको खेती करने के नए तरीके और दूसरी ज्यादा मुनाफे बाली खेती के लिए भी जानकारी समय समय पर दी जाएगी और दूर नहीं जब हमारा किसान सम्पन और खुशहाल होगा और इन कम्पनीज की मुख्य विशेषता है किसानो द्वारा किसानो के हित के लिए इनका संचालन इन कम्पनीज का संचालन व्यापारियों द्वाराश्नहीं बल्कि किसानो द्वारा ही किया जायेगा और इन कम्पनीज को केंद्र एवं प्रदेशीय सरकारों और सरकारी समूहों द्वारा वित्तीय एवं शिक्षा का भी सहयोग प्रदान किया जायेगा ।

कलम से
सी एल गुप्ता
एडवोकेट
एल एल बी, एल एल एम

29 अप्रैल – विश्व नृत्य दिवस पर विशेष

हर वर्ष 29 अप्रैल को मनाए जाने वाले अंतरराष्ट्रीय नृत्य दिवस की घोषणा यूनेस्को के अंतरराष्ट्रीय थिएटर इंस्टिट्यूट की International Dance Committee द्वारा आज ही के दिन महान् नृत्यकार जीन जाज नावेरे के जन्म दिन पर 1982 में की गई। उन्होंने श्लेटर्स ऑन द डांसश नाम से एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक भी लिखी, जिसमें नृत्य सीखने के सारे गुर दिए हुए थे।

सच तो यह है कि नृत्य भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग आदिम समय से है। देवराज इन्द्र के दरबार से लेकर रावण आदि दैत्यों के दरबार की शोभा रहा है नृत्य।

यह भारत का दुर्भाग्य ही रहा है कि यहाँ की संस्कृति, संगीत, कला, साहित्य से लेकर योग, आयुर्वेद और अन्यान्य सभी विद्याओं को जब तक विदेशी तथाकथित विद्वानों द्वारा स्वीकृति नहीं मिल जाती, यहाँ के सभी विद्वान मूर्ख नजर आते हैं।

यही कारण है कि समस्त कलाओं पर प्रकाश डालने वाले हमारे आदि ग्रन्थ नाट्य–शास्त्रश को भी सर्वप्रथम विदेशी द्वारा ही खोजा गया। अन्य तमाम धार्मिक ग्रन्थों को समझने के लिए भी हमें विदेशी विद्वानों पर ही आश्रित रहने की आदत–सी पड़ गई है।

जहाँ तक भारतीय शास्त्रीय नृत्यों की बात है, उनसे विदेशी नृत्यों की तुलना नहीं की जा सकती। हमारे शास्त्रीय नृत्यों में नृत्त व नाट्य की प्रधानता रहती है। इन दोनों के बिना नृत्य नहीं हो सकता।

नाट्य (अभिनय) के चार प्रकार बताए हैं–

आंगिक /वाचिक/आहार्य/सात्त्विक

इनमें भी आंगिक अभिनय को भी मुखज, शरीरज और प्रयत्नज में बाँट दिया जाता है। इन सबमें भी मुखज की प्रमुखता है। अर्थात् शिरोभेद और ग्रीवा –संचालन के अतिरिक्त 7 प्रकार से भृकुटि, 36 प्रकार से नेत्र, 6 प्रकार से कपोल, 6 प्रकार से नासिका, 6 प्रकार से ओष्ठ और 7 प्रकार से चिबुक– संचालन (कुल68) का ज्ञान परम् आवश्यक है। क्या यह सब हिपहॉप और तरह–तरह के कॉटेम्प्रेरी विदेशी नृत्यों में है?

डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल

कश्मीर का जून : हब्बा खातून :

हब्बा खातून का जन्म 1554 में हुआ था। वे कश्मीरी भाषा की जानी–मानी कवयित्री थीं। उनके गीत अभी भी कश्मीर में खासे लोकप्रिय हैं।हब्बा खातून कश्मीर के चंद्रहर गाँव की 16 वीं शताब्दी की मुस्लिम कवयित्री, लेखिका और गायिका थीं। वह एक छोटे–से गाँव, संधारा में पैदा हुई थीं। वे सौन्दर्य की प्रतिमूर्ति थीं। यही कारण है कि उन्हें जछ्न (चंद्रमा) नाम से जाना जाता था। पहली शादी के बाद तलाक हो जाने पर इन्होंने यूसुफ शाह चक से शादी की, जो बाद में कश्मीर के शासक बने। अब उन्हें हब्बा खघतून कहा जाने लगा। मुगघ्ल शासक अकबर ने इस प्रान्त को अपने कब्जे में कर लिया था और इनके पति को बंदी बनाकर बंगाल ले जाया गया, जहाँ उनकी मृत्यु होगई।

पति के निधन के बाद हब्बा खातून ने सूफी पंथ अपना लिया। हब्बा खातून का मकबरा जम्मू श्रीनगर हाईवे सडक पर अथ्वाजान के करीब है। उनके गीत कश्मीर में बहुत ही लोकप्रिय हैं और वह कश्मीरी साहित्यिक इतिहास की एक महान् गीतकार के रूप में याद की जाती हैं। हब्बा खातून एक किसान की लडकी थीं। ज्ञात हो कि हब्बा के पति राजा यूसुफ शाह चक कश्मीर के आखिरी स्वतंत्र शासक थे। जब मुगल शासक अकबर ने धोखाधडघी और विश्वासघात करके कश्मीर पर विजय प्राप्त कर ली और यूसुफ शाह चक को निर्वासित कर दिया, तो हब्बा खातून ने अपने बाकी जीवन को घाटी में घूमते हुए और गीत गाते हुए व्यतीत किया। भले ही उनकी जीवनी के बारे में कुछ विवाद हो, फिर भी उनके नाम से जुड्घे ग्रंथ कश्मीर में व्यापक रूप से लोकप्रिय हैं। हब्बा खातून द्वारा अपने आखिरी दिनों में घाटी में गाए गीत सैकड़ों वर्षों के बाद आज भी लोकप्रिय हैं और मौखिक परम्परा में उनकी गहरी उपस्थिति है। हब्बा खातून को कश्मीर की आखिरी स्वतंत्र कवि रानी के रूप में सम्मानित किया जाता है।

आज भी हब्बा खातून के गीतों की रूमानियत कश्मीर की वादियों को गुलजार कर रही है। उनकी गाई पदावलियाँ और गीत बेहद मर्मस्पर्शी हैं। आपका निधन 1609 में हुआ।

ज्ञात हो कि यहाँ पिरामिड की शक्ल की पहाड़ी का नाम हब्बा खातून रखा गया।

–डॉ. राजेन्द्र कृष्ण अग्रवाल